वार्तालाप.433–जम्मू, दिनांक.05.11.07
Disc.CD No.433, dated 05.11.07 at Jammu

समय–24.03–27.11
जिज्ञासु – बाबा एक वाणी एक में मैंने सुना था कि जो बच्चे बाप से प्रश्न करते वो सम्पूर्ण नहीं कहलायेंगे।
बाबा–प्रश्न भी दो तरह के होते हैं। क्या? एक होता है जिज्ञासा शांत करने के लिये। क्या? सर्विस फील्ड में जाते हैं बहुत सी बातों का समाधान नहीं दे पाते है। अंदर–अदंर दिल में खाता है कि शायद हमने इस बात का जवाब ठीक नहीं दिया। तो उस बात को पूछा जाता है। तो बाबा मना करते है क्या? बाबा तो मना नहीं करते। बाबा तो कहते हैं अंदर जो बात है वो बाहर निकालो। ये अंदर और खाती रहेगी। तो उस आधार पर जो पूछते है वो तो ठीक लेकिन जो विरोध करने के लिये पूछते है कि हम डाउन कर दें, वो गलत है। उसको दिखाया है शास्त्रों में कि देवताओं ने पूंछ पकडी। माना फालो किया। और असुरों ने? असुरों ने मुंह पकड़ा। आपने इस मुरली में ऐसे कहा था। आपने इस अव्यक्त वाणी में ऐसे कहा था। तो जो मुंह पकड़ते है वो हैं असुर। और मुंह पकड़ने वाली माद्दा जिसके अन्दर नहीं है, लेकिन फालो करने वाले हैं, जो कहो वो फालो करना हैं वो देवतायें हैं।....

Time: 24.03-27.11
Someone said: Baba I had heard in a Vani that the children who ask questions to the Father will not be called perfect.
Baba said: Questions are also of two kinds. What? One kind of questions is to satisfy the curiosity (*jigyasa*). When we go to the service field, we are unable to reply to many questions. It keeps pinching our heart that perhaps we did not give a proper reply to this particular question. So, does Baba refrain (anyone) from asking those question? Baba does not refrain. Baba says – bring out whatever doubt is in your mind. It will keep troubling you within. So, the questions which are asked on that basis are ok, but the questions that are asked for the sake of opposing to bring someone down, are wrong. That has been depicted in the scriptures that deities caught hold of the tail (of the snake while churning the ocean along with the demons). It means that they followed (the Godly versions). And what about the demons? The demons caught hold of the mouth. You had said like this in the Murli. You had said like this in the *Avyakta Vani.* So, those who catch hold of the mouth (i.e. the versions) are demons. And those who do not have the ability to catch hold of the mouth, but simply follow (the versions), (and who think that) we have to follow whatever has been said, are deities....

...(किसी ने कहा – जो मुरली में आया वो तो प्रश्न पूछ सकते हैं ना) हां, तो प्रश्न पूछने के लिये मना कहां है? (किसी ने कुछ कहा) प्रश्न पूछने वालों का क्लास में थोड़ा नम्बर है या ज्यादा नम्बर है? (कुछ भाइयों ने कहा – थोड़ा है।) और जो प्रश्न पूछने वाले हैं उनकी संख्या कम होती जाती है या ज्यादा होती जाती है? कम होती जा रही है। कोई–कोई भाई तो ऐसे है हाथ में कागज नहीं रखते हैं, और दो–दो, तीन–तीन घंटे प्रश्नों की बौछार लगी रहती है। इससे क्या साबित होता है कि उनमें कोई भूत आत्मा प्रवेश कर गई। सामान्य स्थिति में वो उतने ज्यादा बोलने वाले भी नहीं हैं। जब वो आत्मा प्रवेश करती है तो बिना किसी कारण के प्रश्नों के ऊपर प्रश्न की झड़ी लगा देती है। (किसी ने कुछ कहा) जो भूत प्रेत आत्मायें हैं वो ज्यादा पाप कर्म करने वाली होती है या कम पाप करने वाली होती है? (किसी ने कहा – ज्यादा पाप) ज्यादा पाप करने वाली आत्मायें जो प्रवेश करती हैं पूरी बात उनकी समझ में आती नहीं है पूरा कोर्स करते नहीं हैं ठीक से, और वो प्रवेश हो करके धम चक्कर मचाते हैं। वो असुर हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

.....(Someone said – we can ask questions related to whatever has been mentioned in the Murlis, can't we?) Yes; is there any restriction on asking questions? (Someone said something) Is the number of those who ask questions less or more? (Some brothers said – It is less) And is the number of those who are asking questions decreasing or is it increasing? It is decreasing. Some brothers are such that – they do not hold any paper (containing questions) in their hands, and they continue to shower questions (on Baba) for two, three hours (continuously). What does it prove? (It proves) that a ghost (soul) has entered them. In a normal situation they do not speak much. When that soul enters, they start asking questions upon questions without any reason. (Someone said something) Do the ghosts and devil souls commit more sins or do they commit fewer sins? (Someone said – more sins) The more sinful souls, which enter, do not understand the subject (knowledge) completely, they do not complete the course properly and they enter and create troubles. They are demons.

समय–29.40–32.55
जिज्ञासु – गिलहरी ने कैसे राम की सेवा की? उसने भी तो सेवा की ना?
बाबा – गणेश जी ने कैसे सेवा की? (किसी ने कुछ कहा) गणेश भी तो सूंड वाला था। वो सूंड वाला जानवर ऐसा था? नहीं। एक मिसाल बताई है गणेश की– कि ऐसे भी देवतायें होते हैं जिनमें देह अभिमान का पुट ज्यादा होता है। फिर भी सेवा करते हैं इसलिये सेवा का उनको मेवा मिल जाता है। कुछ पवित्रता को धारण किया है तो उनकी पूजा चलती चली आ रही है। ऐसे ही कोई गिलहरी की बात नहीं है। वो भी एक प्राणी है। उस तरह का पुरूषार्थ करने वाले भी कोई हैं। दिखाते हैं शास्त्रों में कि जब राम ने पुल बांधा तो बंदर तो अपने बडे–बडे पत्थर ले जा करके पुल में डाल रहे थे। गिलहरी ने सोचा मैं कैसे पत्थर उठाउं? तो पत्थर तो उठाय नहीं सकी। तो बार–बार पानी में नहाने जाती थी भीग कर के आती थी और बालू में जाकर अपनी लोट–पोट होकर के बालू अपने बालों में उलझाए लेती थी और जाय कर के पुल पर उसको बिखराय आती थी।....

Time: 29.40-32.55
Someone asked: How did the squirrel (*gilahari*) serve Ram? It also served him, did it not?
Baba replied: How did Ganeshji serve (his parents)? (Someone said something) Ganesh also possessed a trunk (*soond*). Was he such an animal with a trunk? No. An example of Ganesh is mentioned that there are such deities too, whose covering of body consciousness is. Nevertheless they serve; therefore they receive the fruits of service. They have imbibed purity to some extent; that is why they are continued to be worshipped. Similarly, it is not about a squirrel. That is also a living being (*praani*). There are some who make effort like it. It is shown in the scriptures that when Ram built a bridge (on the stretch of ocean between India and Lanka to defeat Ravan) the monkeys (of his army) were carrying big stones and adding them to the bridge. The squirrel thought – how can I lift stones? So, it could not lift stones. So, it used to repeatedly go to the water to bathe , it used to come (back) wet and then roll in the sand and catch some sand in its hairs and go and scatter them on the bridge....

.....तो खास सहयोग तो नहीं हुआ। लेकिन भावना देखी जाती है। जितनी शक्ति है उतनी शक्ति अपनी, पुल बनाने में लगा दी। तो ऐसे ही यहां भी ऐसी आत्मायें हैं। उनके पास न तन की शक्ति है। क्या? कन्यायें–मातायें है तो तन भोंड़ा है, बूढ़ा शरीर है। तो कोई पूछने वाला नहीं है तन के हिसाब से। कुछ सेवा भी नहीं कर सकती। न धन है उनके पास। मन जो है सारा गृहस्थी में खप गया है बाल–बच्चों की पैदाइश में। मन की पावर भी नहीं है। बुद्धि की पावर भी नहीं है। ऐसी माताओं को बाबा आगे रखता है और शाबासी देता है। क्या? किसके लिये आया हुआ हूं? माताओं के लिये आया हुआ हूं।....

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

.....So, it was not special (*khaas*) cooperation. But the feelings (*bhaavnaa*) are taken into account. Whatever power it possessed, it invested it in building the bridge. So, similarly, there are souls like this here. They do not possess physical power. What? If they are virgins and mothers, if their body is ugly and old, from the point of view of body, nobody cares for them. They cannot do any service either. Neither do they possess any wealth. Their mind has been exhausted completely in household, in giving birth to children. They do not possess the power of the mind. They do not possess the power of the intellect as well. Baba keeps such mothers ahead and appreciates them. What? For whose sake have I come? I have come for the mothers.....

.....अभी–अभी मुरली में बोला कोई एक रूपया देता है कोई सौ रूपया देता है। एक रूपया देने वाले के पास दस रूपये थे। और दस रूपये में से उसने एक रूपया दिया और जिसने सौ रूपया दिये उसके पास कितने थे? दस गुना थे। और उसमें से सौ रूपया दिया। तो दोनों का बराबर भाग्य बनता है। ऐसे ही यहां पर दिल देखा जाता है। क्या? ये नहीं देखा जाता कि किसने कितना दिया? जितना भी दिया दिल से, सतोप्रधानता पूर्वक दिया? ऐसे तो नहीं देते समय दिल के अंदर आया पता नहीं भगवान का काम चल रह है कि नहीं चल रहा है? इसलिये चैक दे दो। अगर नहीं भी भगवान का काम होगा तो कहेंगे हमने लोन दिया था इनको। देखो ये प्रूफ है हमारे पास।

.....Just now it was said in the Murli that someone gives one rupee and someone gives hundred rupees. The one who gave one rupee possessed ten rupees. And out of those ten rupees he gave one rupee and how much money did the one, who gave hundred rupees have? He had ten times that amount. And out of that amount he gave hundred rupees. So, both of them earn equal fortune. Similarly, here the feelings are considered. What? 'Who gave what amount' is not taken into consideration. Whatever he gave, did he give from his heart, and did he give it with pure feelings? Was it a case that while giving, he thought in his heart – I don't know whether it is a Godly task that is going on or not, that is why let me give a cheque? Even if it is not a Godly task, I can say that I had given them a loan. Look, I have this proof.

समय–32.58–33.23
जिज्ञासु – बाबा जैसे कोई सोल किसी में प्रवेश करती है उसका मन कन्ट्रोल होता है जिसमें प्रवेश करती है। वो जिसमें प्रवेश करती है उसे पाप–पुण्य लगता है?
बाबा – उसका पुरूषार्थ रूकता है। उसमें विघ्न डालती है। जो सेवा वो कर सकती उस सेवा को डिससर्विस में बदल देती है। तो हिसाब किताब हुआ ना।
Time: 32.58 – 33.23
Someone said: Baba, just as a soul enters in someone and controls the mind of the person in whom it enters. Does the soul, in whose body it enters, accumulate any sin (*paap*) or charity (*punya*)?
Baba replied: A break is applied on his efforts. It (i.e. the soul that has entered) creates obstacles in it. It transforms the service that he (i.e. the person in whom a soul has entered) can perform into disservice. So, it is a karmic account, isn't it?

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info